

National CME on Foot and ankle disorders

AIIMS Raipur CG 10-7-2016

Course Director: Prof. Dr. Alok Chandra Agrawal

एम्स में पैर व टखने की व्याधियों पर कार्यशाला संपन्न



दबंग रिपोर्टर 🔳 रायपुर

अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान रायपुर में पैर एवं दखने की व्याधियों से संबंधित कार्यशाला का आयोजन किया गया। जिसमें मुख्यतः दखने में पायलॉन फ्रैक्कर, देलस फ्रैक्कर, केलेकेनियम फ्रैक्कर, सबदेलर फ्यूजन, हालक्स वैलगस तथा कैंसर विषय पर चर्चा हुई।

शुरू किया जाएगा पीजी कोर्स

वहीं प्रों. आरसी मीना जयपुर, डॉ. सत्येन्द्र फुलझेले, मेकाहारा तथा डॉ. विनोद तिवारी बिलासपुर ने अपने शोधपत्र प्रस्तुत किए। इस अवसर पर निदेशक प्रों डॉ. नितिन एम नागरकर ने बताया कि एम्स रायपुर में अब सभी प्रकार के अस्थिरोगों का इलाज प्रारम्भ हो गया है। छोटे बच्चों के वक्रपाद के लिए एक स्पेशलिटी क्लीनिक प्रति मंगलवार चलाया जा रहा है तथा शीघ्र ही कुछ विभागों में पोष्टग्रेजुएट कोर्स प्रारम्भ किया जाएगा।

विशेषज्ञों को दिया शल्यक्रिया का प्रशिक्षण

कार्यशाला में बिलासपुर, कोरबा, राजनांदगांव, धमतरी, अंबिकापुर, चांपा, भिलाई तथा रायगढ से लगभग 120 से अधिक वरिष्ठ अस्थिरोग विशेषज्ञों ने भाग लिया । डॉ. बलबिन्दर राना. अध्यक्ष राष्ट्रीय पैर व टखना अस्थि संघ, डॉ. विवेक त्रिखा, ट्रामा सोंटर एम्स दिल्ली, प्रो. रवि मित्तल एम्स दिल्ली, प्रो. रवि गुप्ता चंडीगढ, प्रो. डॉ. आलोक चन्द्र अग्रवाल रायपुर, डॉ. शिशिर रस्तोगी नई दिल्ली अस्थिरोग विशेषज्ञों को अस्थि मॉडलो पर शल्यकिया द्वारा फ्रैक्कर का डलाज करने का प्रायोगिक प्रशिक्षण भी दिया गया।

वर्तमान में सुधार गृह केवल नाम के ही हैं. वहां व्यवस्था बहुत खराब रहती हैं. वहां अपराध पीड़ित बच्चे होते हैं इसलिए सुरक्षा का खतरा तो होता है. वहां बालकों की काउंसिलिंग नियमित रूप से होनी चाहिए.

डॉ. एम. के. साहू, मनोचिकित्सक, अंबेडकर अस्पताल

कुछ महीने पहले ही जीई रोड का डामरीकरण किया गया था. बारिश की पहली झड़ी में ही डामर की परत उपड़ने लगी है. विवेकानंद आश्रम के सामने सड़क पर बजरी बिखर रही है. बारिश नहीं होने पर पूल उड़ने से लोगों को परेशानी होती है.

एम्स में पैर व टखने की हड़िडयों पर विशेष , कार्यशाला में जुटे 250 चिकित्सक

हड्डी रोग विशेषज्ञों ने सीखी इलाज की नई तकनीक

राजधानी रिपोर्टर। रायपुर.

टाटीबंध स्थित अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान(एम्स) में हड्डी रोग पर कार्यशाला में देश के ख्यातनाम चिकित्सकों ने विशेष तौर पर पैर व टखने की हड़िडयों के फ्रैक्चर के नई तकनीक से इलाज की विधि बताई. एम्स के डायरेक्टर डॉ. नितिन एम. नागरकर ने बताया कि इससे छत्तीसगढ़ के दूर-दराज के क्षेत्रों से आये हड्डी रोग विशेषज्ञों को फायदा होगा. वे यहां सिखाई गई तकनीक से मरीजों को लाभ पहुंचाएंगे. इस कार्यशाला में मुख्य रुप से टखने में पायलान फ्रैक्चर, टेलस फ्रैक्चर, केलेकेनियम फ्रैक्चर, सबटेलर फ्यूजन, हालक्स वैलगस तथा कैंसर विषय पर चर्चा हुई. एम्स के अस्थि रोग विशेषज्ञ डॉ. आलोकचंद्र अग्रवाल ने बताया कि इस कार्यशाला में बिलासपुर, कोरबा, राजनांदगांव, धमतरी, अंविकापुर,



एम्स में वर्कशॉप के दौरान अतिथियों के साथ डॉ. अग्रवात.

चांपा, भिलाई तथा रायगढ़ सहित रायपुर से 250 से अधिक वरिष्ठ अस्थिरोग विशेषज्ञों ने भागीदारी निभाई.

इन सभी चिकित्सकों को अस्थि मॉडलों पर शल्य क्रिया द्वारा फ्रेक्चर का इलाज करने प्रायोगिक प्रशिक्षण भी दिया गया. चिकित्सकों को बताया गया कि हड्डी टूटने के बाद प्लेट और रॉड को किस तरह फ्रेक्चर वाले

स्थान पर बैठाया जाता है. जिससे आगे चलकर इंफेक्शन आदि का खतरा न रहे. सामान्य फ्रेक्चर की दशा में भी इलाज की जानकारी दी गई.

कार्यशाला का उद्घाटन मुख्य अतिथिडॉ. राजबहादुर, उपकुलपित, बाबा फरीद विश्वविद्यालय, फरीदकोट, पंजाब ने किया. इस अवसर पर अधिष्ठाता डॉ. सूर्यप्रकाश धनेरिया, चिकित्सा अधीक्षक डॉ.

ऑपरेशन के बाद भी हड़िडयों का टेढ़ापन नहीं जाता

कार्यशाला में प्रो. डॉ. अग्रवाल विभागाच्यक्ष अस्थिरोंग, एम्स रायपुर ने बताया कि पैर व टखने की व्याधिया छत्तीसगढ़ में अधिक हैं. यही कारण है कि यहां ऑपरेशन के बाद भी मरीजों की हड़िडयों का टेढ़ापन नहीं जाता. कई बार आपरेशन के बाद दर्द तथा घाव भी नहीं भरता. इससे निदान की जानकारी वर्कशॉप में दी गई.

प्रवीण कुमार नीमा, उपअधिष्ठाता डॉ. कृष्णदत्त चावली, अस्थि रोग विभाग से सहायक प्राध्यापक डॉ. हर्षल साकले, डॉ. विकाश साह, डॉ. अभिषेक जैन, डॉ सिद्धान्त चंदेल, डॉ. सागर मीना का विशेष योगदान रहा.

इन विशेषज्ञ चिकित्सकों ने दी जानकारी

इस कार्यशाला में मुख्य रूप से डॉ. बलविन्दर राणा. अध्यक्ष, राष्ट्रीय पैर व टखना अस्य संघ, डॉ. विवेक त्रिखा टामा सेटर एम्स दिल्ली, प्रो. रवि मित्तल एम्स दिल्ली, प्रो. रवि गुप्ता चंडीगढ़, डॉ. शिशिर रस्तोजी नई दिल्ली ने अस्यिरोग विशेषझों को प्रशिक्षित किया, प्रो. आर.सी. मीना जयपुर, डॉ. सत्येन्द्र फुलझेले मेकाहारा और डॉ विनोद तिवारी बिलासप्र ने अपने शोघपत्र प्रस्तृत किये आयुष विश्वविद्यालय के कलपति डॉ. अरुण दाबके ने सिकलसेल मरीजो के पैरों में होने वाली बीमारियों की ओर ध्यान आकार कराया.









































































































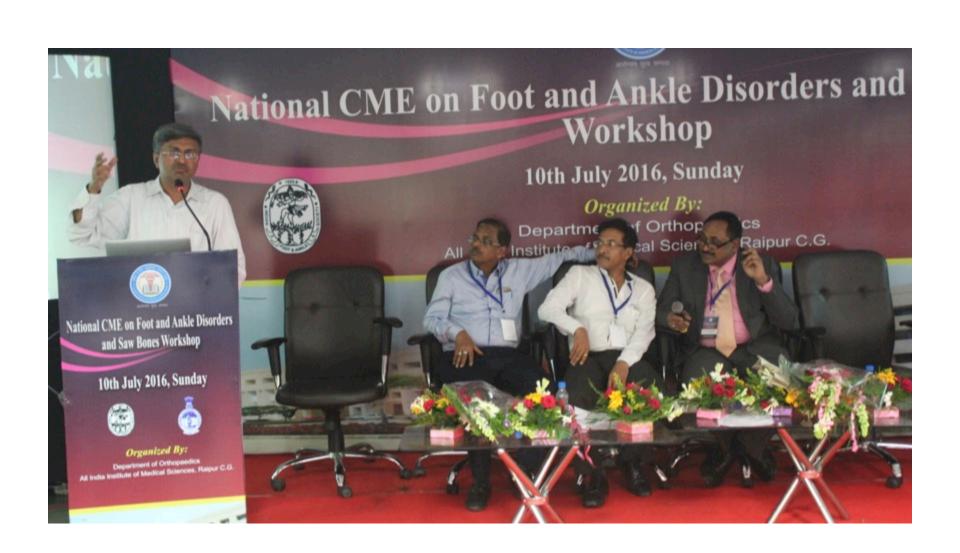












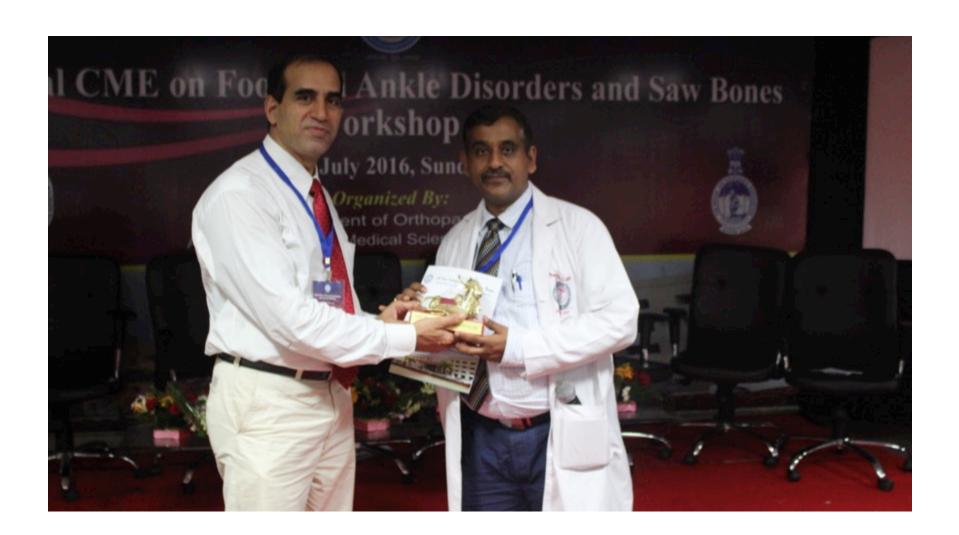












Thank you

